स्नातकोत्तर (संस्कृत) तृतीय सेमेस्टर

इकाई- 1 ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)

द्वारा डा.संजय कुमार चौबे

एच. डी जैन कॉलेज, आरा

ध्वन्यालोक के अनुसार अभाववाद का विवेचन

ध्वनि प्रवर्तक आचार्य आनंदवर्धन ने अपने ध्वनिसिद्धांत की स्थापना करने से पूर्व ध्वनि के विरोध में संभाव्य एवं प्रचलित मतों की समीक्षा विस्तार से की है। ध्वनि सिद्धांत के विरोध में मुख्यतः तीन पक्ष उपस्थित होते हैं- अभाववाद, भाक्तवाद अनिर्वचनीयतावाद। जिसे निम्न श्लोक के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है-

काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्व-

स्तस्याभावं जगदुपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये।

केचिद्वाचां स्थितमविषये तत्वमूचुस्तदीयं

तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम्।।

इसमें प्रथम अभाववाद है तथा इसके भी तीन पक्ष बनते हैं-

1. नास्ति ध्वनिःप्राचीनकाव्यशास्त्रे:-

प्रथम विकल्प के समर्थक इन अभाववादियों का कथन है कि आप ध्वनि को काव्य की आत्मा सिद्ध करना चाहते है लेकिन 'शब्दार्थशरीरं तावत्काव्यम्' इस आधार पर तो शब्द और अर्थ का सम्बद्ध शरीर ही काव्य पदवाच्य होता है। इस प्रकार स्वयं शब्द और अर्थ तो ध्वनि हो नहीं सकते और यदि आप उनके सौंदर्य या चारुत्व को ध्वनि मानते हैं तो वह पुनरावृत्ति मात्र है क्योंकि शब्द और अर्थ के चरुत्व के तो सभी प्रकारों का विवेचन किया जा चुका है। यथा शब्द का चारुत्व शब्दालंकार तथा शब्द गुण के अंतर्गत आ जाता है और अर्थ का चारुत्व अर्थालंकार तथा अर्थगुण में आ जाता है। इनके अतिरिक्त वैदर्भी आदि रीतियां और इनसे अभिन्न उपनागरिका आदि वृत्तियां भी, जिनका संबंध शब्द अर्थ के साहित्य से है सभी प्रकार के शब्द और अर्थगत सौंदर्य का अंतर्भाव इनमें हो जाता है। अत एव ध्वनि से आशय यदि शब्द और अर्थगत चारुत्व से है तो उसका विवेचन पहले ही किया जा चुका है फिर यह ध्वनि उन चारुत्वोत्कर्षक हेतु से भिन्न कौन सा

नया पदार्थ है। ग्रंथकार के शब्दों में- 'तत्र केचिदाचक्षीरन् शब्दार्थशरीरं तावत्काव्यम्। तत्र शब्दगताश्चारुत्वहेतवोऽनुप्रासादयः प्रसिद्धा एव। अर्थगताश्चोपमादयः।..............तद्व्यतिरिक्तः कोऽयं ध्वनिर्नामेति।

2. नास्ति ध्वनिः गुणालङ्कारादिव्यतिरिक्तः:- अभाववाद की दूसरे पक्ष का कथन है कि यदि ध्वनि है भी तो वह गुण व अलंकार से भिन्न नहीं है। अतः उसे हम अलग से काव्यतत्व नहीं मान सकते क्योंकि प्रसिद्ध परंपरा से जिसमें काव्य व्यवहार होता रहा है उन प्रसिद्ध मार्गों को छोड़कर ध्वनिरूप किसी नवीन अर्थ में काव्य प्रकार माना जाए तो काव्यतत्व की ही हानि होती है। आशय यह है की आखिर ध्वनि की चर्चा से पहले भी तो काव्य का आस्वादन होता रहा है। यदि काव्य की आत्मा का अन्वेषण आप अब कर रहे हैं तो अब तक क्या लोग अभाव में भाव की कल्पना करते रहे हैं। इस प्रकार तो पूर्ववर्ती काव्य का काव्यत्व ही असिद्ध हो जाएगा और दूसरी बात है कि परंपरा से चले आ रहे 'सहृदयहृदयाह्लादि शब्दार्थमयत्वमेव काव्यत्वम्' रूप

काव्यलक्षण भी उच्छिन्न हो जाएगा क्योंकि आप तो शब्दार्थ के अतिरिक्त ध्वनि को ही काव्यविशेष मानने पर तुले हैं और यदि ध्वनि सिद्धांत को मानने वालों में से ही कुछ लोगों द्वारा ध्वनि में काव्यत्व व्यवहार आप करा भी दे तो संपूर्ण विद्वत्समुदाय से स्वीकृत न होने से उसे अलग काव्यतत्त्व नहीं ही माना जा सकता है- ' अन्ये ब्रूयुः नास्त्येव ध्वनिः। प्रसिद्धप्रस्थानव्यतिरेकिणः काव्यप्रकारस्य काव्यत्वहानेः। ....सकलविद्वन्मनोग्राहितामवलम्बते।'

3.नास्ति ध्वनिः काव्यात्मा:- तीसरा पक्ष यह है कि यदि ध्वनि को अलंकार से भिन्न स्वतंत्र काव्य तत्व के रूप में स्वीकार कर भी लिया जाए तो उसे काव्य की आत्मा तो कथमपि नहीं माना जा सकता क्योंकि हमारी दृष्टि से ध्वनि कोई अपूर्व वस्तु तो नहीं दिखती। हां, यह काव्य का चारुत्वोत्कर्षक हो सकती है। इस प्रकार यदि ध्वनि कमनीयता का ही कोई रूप है तो वह कथित चारुत्व कारकों में ही अंतर्भूत हो जाता है। अतः केवल नया नाम रखने से ध्वनि का महत्व स्थिर नहीं होता- 'न संभवत्येव ध्वनिनामापूर्वः कश्चित् कामनीयकमनतिवर्तमानस्य तस्योक्तेष्वेव

चारुत्वहेतुष्वन्तर्भावात्। तेषामन्यतमस्यैव वा अपूर्वसमाख्यामात्रकरणे यत्किंचन कथनं स्यात्।

हाँ, यह हो सकता है कि वाक् के भेद- प्रभेदों की अनंतता के कारण लक्षणकारों ने किसी विशेष की समाख्या न की हो और आप उसी को खोज निकालकर ध्वनि नाम दे रहे हैं। परंतु यह तो कोई बड़ी बात नहीं हुई। यह तो झूठी सहृदयता मात्र है।अतः यह ध्वनि व्यर्थ जल्पना मात्र है इसमें कोई सारतत्त्व नहीं है-

'तस्मात् प्रमादमात्रं ध्वनिः। न त्वस्य क्षोदक्षमं तत्त्वं किंचिदपि प्रकाशयितुं शक्यम्।'

इस प्रकार अभाववादियों द्वारा ध्वनि विरोध में दिए गए तर्कों का आनंदवर्धन ने आगे निराकरण किया है। उनका कथन है कि जो लोग यह कहते हैं कि प्रसिद्ध मार्ग से भिन्न में काव्यत्व मानने पर काव्य की हानि होगी। अतः ध्वनि नहीं है। उनका कथन ठीक नहीं है क्योंकि वह ध्वनि केवल लक्षणकारों को ही ज्ञात नहीं है अपितु लक्ष्यग्रंथ रामायण महाभारत आदि में भी वही सहृदयों को आह्लादित करने वाला काव्यतत्व है-' यतो लक्षणकृतामेव स

केवलं न प्रसिद्धः लक्ष्ये तु परीक्ष्यमाणे स एव सहृदयहृदयाह्लादकारि काव्यत्वम्।'

अतः ध्वनि है और वह काव्य का प्रधान तत्व है। अभाववादियों का दूसरा जो कथन है कि यदि ध्वनि चारुत्वोत्कर्षक से भिन्न नहीं है तो गुणालंकारादि में ही उसका अंतर्भाव हो जाएगा। उनका भी कथन ठीक नहीं है क्योंकि अलंकार शब्दार्थ के आश्रित होते हैं ध्वनि व्यंग्य- व्यंजक के आश्रित है। अतः इन दोनों में प्रथम तो आश्रय भेद है और दूसरा ध्वनि प्रधान है अंगी रूप है क्योंकि शब्दार्थ अपने आप को गौड़ कर उस प्रतिमानाख्य रूप ध्वनि को अभिव्यक्त करते हैं और गुणालंकार शब्दाश्रित होने से अप्रधान। अतः गुणालंकार में ध्वनि का अंतर्भाव नहीं हो सकता-

व्यङ्ग्यव्यञ्जकसम्बन्धनिबंधनतया ध्वनेः।

वाच्यवाचकचारुत्वहेत्वन्तः पातिताः कुतः।।

इसलिए ध्वनि है और वह काव्य का प्रधान तत्व है।